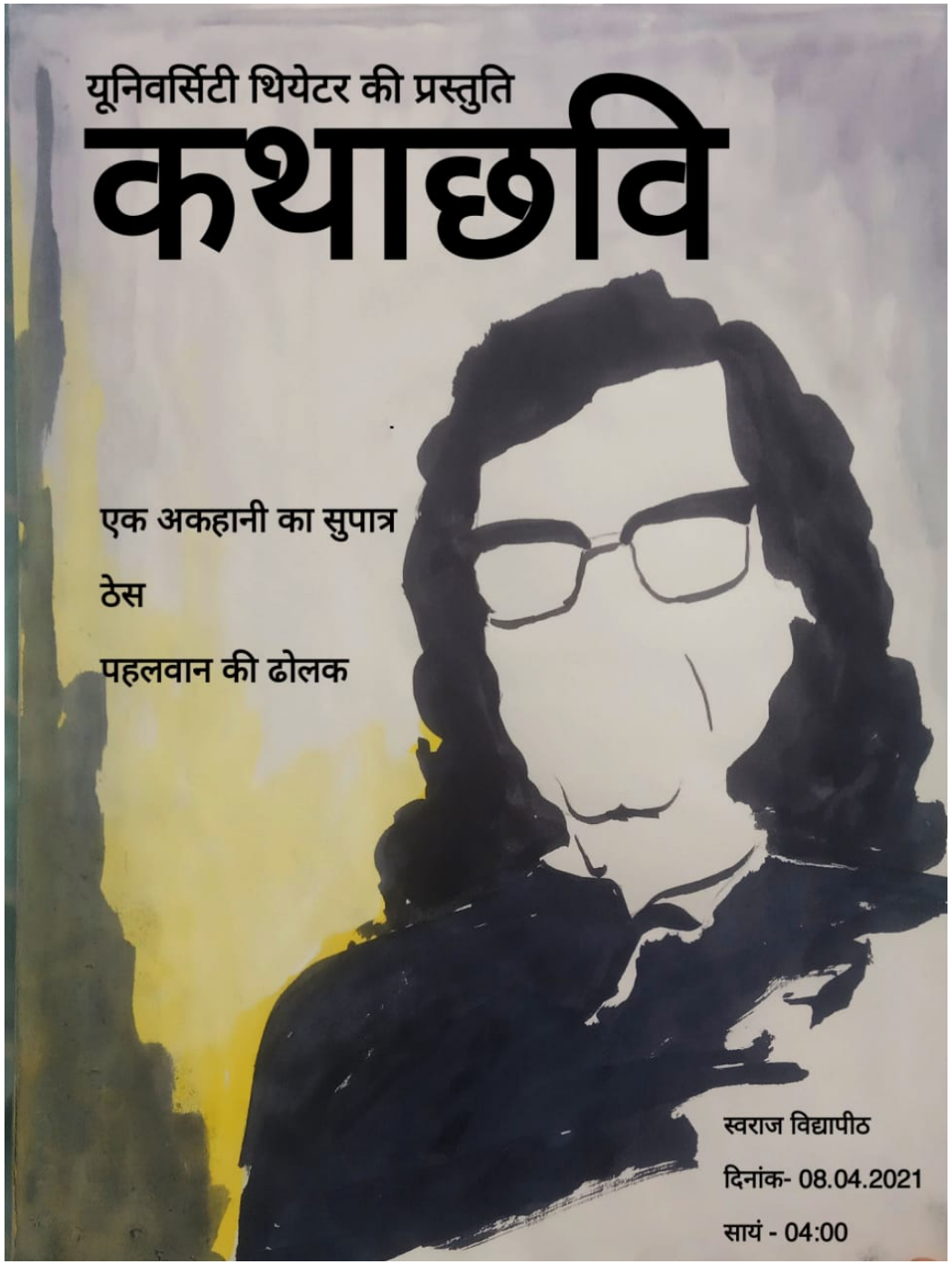

प्रस्तुति के बारे में:

यह प्रस्तुति फणीश्वरनाथ रेणु की जन्मशताब्दी वर्ष में यूनिवर्सिटी थियेटर की तरफ से श्रद्धांजलि है. इस प्रस्तुति की तीन अलग अलग कहानियों का निर्देशन छात्रों ने ही अपनी टीम के साथ सामूहिकता में किया है. कोविड, मौसम और परीक्षा के तनाव से जूझते हुए इस प्रस्तुति में एक अनगढ़ता भी है.

'एक अकहानी का सुपात्र' एक अनोखे किरदार के बारे में है जो गाँव से शहर आ तो गया है लेकिन उसका मन गाँव में रमा है. शहर के तौर तरीकों पर वह तंज करता है, पर अंतत: शहर के रंग में रंग जाता है. जीवन में कहानी की अनुपस्थिति के दौर में लेखक इस किरदार की बातों को ही कहानी बना लेता है.

'ठेस' कहानी एक ग्रामीण कलाकार के स्वाभिमान और आत्मसम्मान के बारे में है. किसी प्रतिभा को बहुत जतन से सहेजने की जरूरत होती है, समाज में अक्सर इसकी सलाहियत नहीं होती. नतीजा होता है कि कलाकार अंतत: कला से दूरी बना लेते हैं.

'पहलवान की ढोलक' महामारी की पृष्ठभूमि मे एक 'पहलवान' की कथा है. जो अभाव से वैभव और फिर अभाव तक की यात्रा करता है. लेकिन उसकी जीजिविषा महामारी और प्रकृति की मार से जूझ रहे गाँव को प्रेरित करती है. कहानी में यह प्रश्न भी है कि क्या कला या खेल की प्रसांगिकता सत्ता के हिसाब से तय होती है? यह कहानी नई व्यवस्था के आने पर पुरानी व्यवस्था मे ढल चुके लोक-कलाकारों की व्यथा का हृदय विदारक वर्णन है.

मंच पर :

राशि, वैशाली, अमिता, सोमेश, प्रिंस, नीलेश, अभिषेक, चंदन, प्रदीप्त, अभिषेक, नीतेश, मनीष, सौरभ, अमिता, शिवा, स्वाति, बबली, विदुषी, काजल, अंकित, अनुराग, मुकेश, चंदन आदर्श, दिव्या, शिवा, अपूर्वा, सिद्धांत, अनुराग, विवेक, चंदन, हिमांशु, पार्थ और रजनीश,

प्रस्तुति नियंत्रक : अपर्णा, प्रकाश, अभिषेक, शिखा, श्रेया, राजीव, कौस्तुभ, विवेक और प्रदीप्त

टीम यूनिवर्सिटी थियेटर - वर्षा, पिंकी, आलोक, प्रशांत, प्रखर, रविकांत, ज्ञानेंद्र, प्रकाश, राकेश, प्रांशु, राज

यूनिवर्सिटी थिएटर के बारे में– साल 2018 का अंत हो रहा था, सर्दियों की आमद होने वाली थी ऐसे में कुछ छात्र एकत्रित हुए इस ध्येय से कि विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम से इतर उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के विकास के लिए भी कोई मंच होना चाहिए. जहां वो सिलेबस की दुनिया के बाहर एक दूसरे से मिलकर अपने आत्म को तलाशें. इस खोज में उनके सामने विकल्प आया एक रंग समूह बनाने का. यह समूह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों की एक स्वायत्त सांस्कृतिक पहल है. यह ध्यान में रखते हुए कि विश्वविद्यालय का अतीत इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियों को संजोए हुए हैं. प्रस्तुतियों के सिलसिले की शुरुआत कहानी मंचन से हुई जिसके अंतर्गत दो कहानियों 'सिरी उपमा जोग' और 'भोलाराम का जीव' का मंचन हुआ. इस सत्र में समूह ने श्रुति नाट्य शैली की शुरूआत भी की जिसके तहत प्रेमचंद जयंती पर 'कफन' कहानी का नाट्य पाठ हुआ. गाँधी जी के जीवन पर आधारित प्रस्तुति 'जब वी मेट गाँधी' की प्रस्तुति के बाद समूह ने श्रीकांत वर्मा के कविता संग्रह 'मगध' की प्रस्तुति की. 'यूटी की किताबशाला' किताबों पर चर्चा की शृंखला है. कोरोना काल में रेणु की इन्हीं कहानियों पर वीडियो प्रस्तुति भी हो चुका है.

संगीत- जुगेश मुकेश गुप्ता

निर्देशन: राशि (एक अकहानी का सुपात्र), आदर्श (ठेस), दिव्या (पहलवान की ढोलक) और समूह

पोस्टर - पार्थ

प्रस्तुति समन्वयक- प्रदीप्त

परिकल्पना और मार्गदर्शन - अमितेश कुमार

सरंक्षण- डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, डॉ. विनम्र सेन सिंह, डॉ. सुजीत कुमार सिंह, डॉ. बृजेश कुमार पांडेय और श्री प्रवीण शेखर

आभार- डॉ. दीनानाथ मौर्य, डॉ. स्वप्निल श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, बैकस्टेज समूह और स्वराज विद्यापीठ